आफ़ताबे विलायत

मुख़्तसर हालात

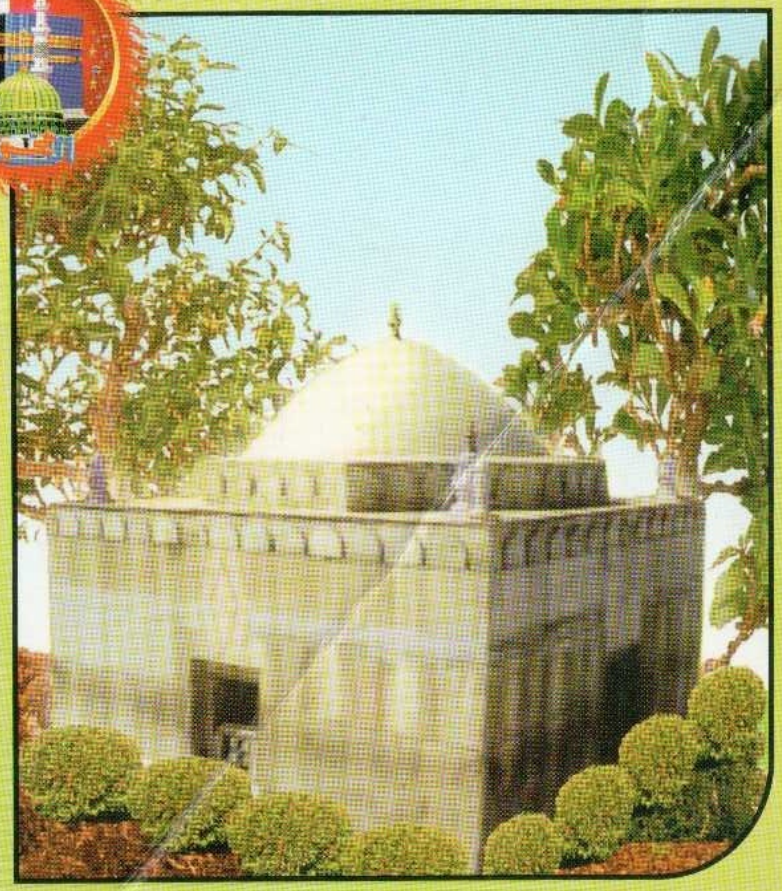

* नाशिर *

मो. सलीम शाह (बागवाले)

सदर, जिला इज़्तिमाई शादी कमेटी,

इन्तेसाब

अपने दादा कुत्बे आलम अबुल्बक़ार व
अपने परनाना सय्यद ज़ाकिर हुसैन
और अपनी माँ सय्यदा सुनैहरा ख़ातून
और अपने वालिद क़ारी सय्यद
महज़र अली के नाम
जिनके तसररूफ़ाते बावनी और
दुवाओं ने क़लम उठाने का
सलिक़ा बख़्शा ।

.....शजर मदारी

नात शरीफ

जब भी दिले रन्जूर ने दी है सदा या मुस्तफ़ा,
बरसी तुम्हारे प्यार की मुझ पर घटा या मुस्तफ़ा ।

होगा चमन हददे नज़र खुल जाएगा जन्नत का दर,
मरक़द में जब देखेंगे हम जलवा तेरा या मुस्तफ़ा ।

इम्दाद उसको मिल गई उसकी खिली दिल की कली,
रन्जो ग़मो आलाम में जिसने कहा या मुस्तफ़ा ।

तुम नूर बनके आए जब दुनियाँ ने पहचाना है तब
वरना ख़ुदा का नूर भी इक राज़ था या मुस्तफ़ा ।

तू रब का ऐसा नूर है, है मान्द जिसके सामने,
हर इक किरन हर इक चमक हर इक ज़िया या मुस्तफ़ा ।

जो मुश्किले आसाँ करे क़त्बेहजीं शादाँ करे,
दुनियाँ में कोई भी नहीं तेरे सिवा या मुस्तफा ।

पत्थर बना रश्के गुहर फूला फला है वो शजर,
तेरे वसीले से हे की जिसने हुआ या मुस्तफा ।

मनक़बत शरीफ़

नहीं है कोई ग़म मदारे दो आलम,
है जब आप हमदम मदारे दो आलम ।

बनी तेरी चश्मे करम से ख़िज़ाँ भी,
बहारों का मौसम मदारे दो आलम ।

दो आलम में तेरा करम है मयस्सर,
न हो कोई हमदम मदारे दो आलम ।

जब आए हो तुम हिन्द की सरज़मीं पर
हुआ कुफ़्र बेदम मदारे दो आलम ।

किया सरबलन्द आपने इस ज़मीं पर,
हिदायत का परचम मदारे दो आलम ।

तेरे दर पे अश्कों के मोती लुटाऊँ,
ये है दिल का आलम मदारे दो आलम ।

शजर फ़ख्र करती है मुझ पर मसर्रत,
मिला जब तेरा ग़म मदारे दो आलम ।

* क्या और कहाँ (विषय सूची) *

- 786 — 1
- विलादते कुत्बुल्मदार (रजि.) — 3
- नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की बशारत (भविष्यवाणी) और विलादत की बरकतें — 5
- आपका शजर ए पिदरी व मादरी — 6
- आपकी तालीम (शिक्षा) — 7
- आपका बैतुल मक़दिस में सय्यदना वायज़ीद बुस्तामी रह. से मुरीद होना — 10
- ज़ियारते हरमैन शरीफैन — 11
- मदारे पाक का रसूलेपाक (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) से बराहे रास्त मुरीद होना और हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) का मौला अली के सिपुर्द फ़रमान — 15
- हिन्दुस्तान की तरफ रवानगी — 16
- हिन्दुस्तान में आगमन — 17
- इन्सानी ज़रूरतो से बेनियाज़ी — 18
- इस्लामी शिक्षा का प्रचार — 19
- अजमेर आगमन और अजमेरवासियों का कष्ट निवारण — 20
- अजमेर में शहीदों की लाशें — 22
- अजमेर के लोगों का दीने इस्लाम कुबूल करना — 23
- हज के लिये रवानगी — 24
- मुर्दा खोपड़ी जीवित हो गई — 25
- ख़ानए काबा में आपकी पुरजोश तक़रीर — 26
- बगदाद में गौसेपाक से मुलाकात और उनकी बहन बीबी नसीबा — 27
- अफगानिस्तान में कुऐं से पानी का सैलाब उमड़ना — 29
- अन्धी की आँख में रोशनी हो गई — 30
- शेख़ मुहम्मद लाहोरी — 31
- मदारे पाक का विसाल — 32
- आपके खुल्फाए बावकार रहमतुल्लाह अलैहिम — 33
- शरजए आलिया तब्कातिया तैफूरिया वकारिया मदारिया — 37
- शिज्र-ए-जदि्दिया सय्यद महज़र अली — 41
- शिज्र-ए-मुर्शिदिया हज़रत सय्यद महज़र अली — 43
- 52-डाकू औलिया बन गये — 44
- विभिन्न शहरों में प्रस्थान — 45

786

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसने सदैव सत्यता एकता अखण्डता और भाईचारे की शिक्षा हर इन्सान को दी है । ऊँच नीच, छुआछूत, जात–पॉत जिसका इस्लाम में कोई आधार और कोई हक़ीक़त नहीं, इस धर्म की मित्रता प्रेम से है और इसकी शत्रुता नफ़रत से है।

जब से ये दुनियाँ बनी तब से इस्लाम के पैग़म्बर और इस धर्म के शिक्षक, जिनको नबी कहते हैं, आते रहे और लोगों को प्रेम और भाईचारे का पाठ पढ़ाते रहे । कुर्आन ने जात–पांत, छुआछूत का विरोध इस तरह किया है –

आयत – *"या अइयोहन्नासो इन्ना ख़लक़ना कुम मिन ज़करींव व उन्सा वजअलनाकुम शुऊबंव व क़बाइला लेत आरफ़ू इन्ना अकरमकुम इन्दल्लाहे अत्क़ाकुम"*

तर्जुमा – ऐ लोगों हमनें (अल्लाह ने) तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और ये ज़ातें बिरादरियाँ, ये क़बिले सिर्फ इसलिये बनाए के तुम आपस में एक दूसरे को पहचान सको मगर अल्लाह के क़रीब वो है जो तक़्वे वाला है, नेक हैं।

यहॉ पर एक मर्द और एक औरत से तात्पर्य हज़रते आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा अलैहिस्सलाम हैं। हज़रते आदम अलैहिस्सलाम, जो सबसे पहले नबी और तमाम इन्सानों के पिता है और इन्हीं से रिश्ते की वजह से तमाम इन्सानों को आदमी (आदम का बेटा) कहा जाता है । वो आए उसके बाद

तमाम नबी आते रहे जैसे याकूब (अलै.), यूसुफ (अलै.), यूनुस (अलै.), मूसा (अलै.), इब्राहीम (अलै.), ईसा (अलै.) यहाँ तक 1 लाख 24 हजार नबी इस दुनियाँ में आते रहे, जाते रहे। सबसे आख़री नबी और इस्लाम के सबसे अन्तिम पैग़म्बर हुज़ूर अहमदे मुज्तबा मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) आए और उन्होंनें सिर्फ 23 साल में दीने इस्लाम के क़ानून और उसकी किताब कुर्आन की शिक्षाओं से लोगों को आक्षित किया। हुजूर (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का जब इस दुनियाँ में ज़ाहिरी क़याम का वक़्त खत्म हुआ तो उन्होंनें हज्जतुलविदा (अपने पहले और आखरी हज) में ये ऐलान फरमाया कि –

हदीस – तरक्तो फी कुमुरसक़लैन किताबुल्लाहे व इतरती ।

तर्जुमा – मैं तुममें दो भारी चीज़े छोड़े जाता हूँ, एक कुर्आन और दूसरी मेरे अहले बैत यानी मेरे बाद तुम सबकी हिदायत, यही दो चीज़े करेंगी।

अंततः नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) ने विसाल फरमाया । उसके बाद हिदायत की ज़िम्मेदारी और इस्लाम की शिक्षा के प्रचार प्रसार का झण्डा सहाबा ए किराम और अहले बैते रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) ने हाथों में ले लिया, कुछ ही वर्षो में इस्लाम का एक छोटा सा दीपक सूर्य की तरह चमकने लगा और सारे अरब को प्रकाशित करने लगा । सहाबा (रिज्वानुल्लाहे अलैहिम अज्मईन) के ज़माने के बाद ताबईन का वक़्त आया, तब तक इस्लाम की शिक्षाएं बामे उरूज पर पहुँच

चुकी थी, लेकिन हिन्दुस्तान, चीन और अजमी बेशतर इलाक़े इन शिक्षाओं से दूर थे । अब सहाबा ए किराम इस दारेफ़ानी को अलविदा कर चुके है, नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) भी ज़ाहिरी तौर पर मौजूद नहीं, कौन है जो इन अजमी बन्ज़र ज़मीनो पर इस्लाम के बादलों से हिदायत की बारिश करवा के ईमान की खेतियों को लहलहा दे । ज़ेहन ये सोच ही रहा था, के दमिश्क की जामा मस्ज़िद की मीनार से एक सदा सुनाई पड़ी –

"या अइयोहन्नासो इत्तकू अल्लाह अल्लाह अल्लाह"

ऐ लोगों तक़्वा इख्तियार करो नेक हो जाओ ।

लोगों की आँखों ने देखा एक सफेद आदमक़द परिन्दा दमिश्क के लोगों से ख़िताब करके इन जुमलों को दुहरा रहा है, परिन्दा तो लुप्त हो चुका था, मगर दमिश्क और पूरे अरब में एक कोहराम मच गया था, ये क्या चीज़ थी, ये चीज़ हमें क्या बताना चाह रही थी, हो न हो कोई इन्क़लाब आने वाला है ।

विलादते कुत्बुल्मदार (रज़ि.)

मख़्लूके ख़ुदा समझीं हो या न समझी हो, मगर मैने समझ लिया था कि हो न हो इस परिन्दे की लोगों को तक़्वे और इबादत की तल्क़ीन इस बात की तरफ इशारा कर रहीं है कि वो हादी जिसकी हिदायत से भारत और दुनियाँ के कई मुल्क़

प्रकाशित होंगे, उसके आने का समय हो गया है और ऐसा ही हुआ । सन् 242 हि. ईद का दिन बवक़्ते फज्र मुल्के शाम (सीरिया) का शहरे हलब उस शहर में सय्यद अली हलबी का मकान, जिसमें सय्यदा हाजरा उर्फ फात्मा सानिया रह. के बत्न (कोख) से कुत्बुल्मदार (रज़ि.) की विलादत हुई।

ये हिन्दुस्तान की धरती जो सतीप्रथा और इस जैसी तमाम रस्मों से ऊब चुकी थी ये सुनकर प्रसन्नचित मुद्रा में झूम उठी के वो वली आ गया जिसको मालिक ने हिन्दुस्तान की बंजर धरती को सींचने के लिये चुना था ।

मंदसौर की धरती की खेतियाँ खुशी में गाने लगी, वो आपस में बतियाने लगीं, कल कुत्बुलमदार के पग मन्दसौर में पड़ेंगे कल यहाँ उनका चिल्ला होगा, जो क़यामत (सर्वविनाश) तक एकता और अखण्डता काप्रतीक होगा, जूनागढ़ (गुजरात) की गिरनार पहाड़ी भी आज खुशी से फूले न समा रही है, कि कल मदारूल्आलमीन के पदचिन्ह मेरे सीने पर बने होंगे, अजमेर की कोकिला पहाड़ी, नेपाल का मदारीया पहाड़, मद्रास (जिसका नाम पहले मदारस था) की धरती, मुम्बई की धरती आज सभी बदीउद्दीन के आने पर जश्न मना रही है, सारे भारत में आज किसी त्योहार की तरह मालूम हो रहा है, हर तरफ नूरो निक्हत के गुन्चे खिल रहे हैं, हर ओर प्यार की कलियाँ चटख़ रही है।

नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की बशारत (भविष्यवाणी) और विलादत की बरकतें

विलादत से पहले नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) भी अली हलबी के मकान पर आलमे रोया में तशरीफ़ लाते हैं और फ़रमाते है, ऐ अली कल तुम्हारे घर में अल्लाह का एक वली पैदा होगा, जो विलायत के मरतबए कुत्बुल्मदार पर फायज़ होगा, उसका नाम बदीउद्दीन रखना ।

उधर हिन्दुस्तान का ये आलम था और इधर हलब की धरती पर कुत्बुलमदार विलादत के बाद अपने रब को सजदा कर रहे थे और कल्मागो थे, आपकी मॉ और क़रीब में खड़ी अन्ना (दाई) और सभी औरते अपने कानो से ये अल्फ़ाज़ सुन रही थी–

"अश्हदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाहो व अश्हदो अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू"

तर्जुमा – मैं गवाह हूँ इस बात का के कोई ईश्वर नहीं अल्लाह के अलावा और मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) उसके बन्दे और रसूल है ।

पैदाइश के बाद घर का अजीब हाल था, घर की बूढ़ी बकरी जिसने दूध देना बन्द कर दिया था, वो दूध देने लगी थी,

हुजूर (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) और अन्य असहाबे कराम अली हलबी को मुबारकबाद देने आए थे, अली का घर विलायत के प्रकाश से प्रकाशित था ।

धीरे–धीरे वक़्त गुज़रता जा रहा है बदीउद्दीन अब अपने पैरो से खड़े होकर चलने लगे हैं, उम्र 4 वर्ष की हो चुकी है, बच्चों को खेलता देखते है तो दिल खेलने के लिये मचलने लगता हैं, बच्चों की तरफ पहला क़दम बढ़ाते ही कानो से एक आवाज़ टकराती है –"ऐ बदीउद्दीन मेरी तरफ़ आ जाओ" ये आवाज़ सुनकर वो नन्हॉ बच्चा बदीउद्दीन ठिठक जाता है, इधर–उधर देखता है, पर कुछ नज़र नहीं आता । आख़िरकार खेल से जी बदलकर क़दम वापस घर की तरफ बढ़ जाते है । दिल का भी अजीब हाल है, अगर दिल को सुकुन मिल रहा है तो सिर्फ इबादते इलाही से, एक ईश्वर की पूजा से ।

आपका शजर ए पिदरी व मादरी

हज़रत सय्यद बदीउद्दीन कुत्बुल्मदार जो हसबो नसब के एतबार से हसनी और हुसैनी सय्यद है, बाप की तरफ से आप हुसैनी सय्यद है, शजरा कुछ इस प्रकार है –

"हज़रत सय्यद बदीउद्दीन कुत्बुल्मदार वल्द क़ाजी सय्यद क़िदवतुद्दीन अली हलबी रह. वल्द सय्यद बहाउद्दीन रह. वल्द सय्यद जहीरूद्दीन रह. वल्द सय्यद अहमद रह. वल्द सय्यद इस्माईल सानी रह. वल्द सय्यद मोहम्मद रह. वल्द

सय्यद इस्माईल रह.वल्द सय्यदना इमाम जाफ़र सादिक़ रदीअल्लाह वल्द सय्यदना इमाम बाकर रदीअल्लाह वल्द सय्यदना जैनुल्आबदीन रदीअल्लाह वल्द हुजूर सय्यदना इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम ।"

माँ की तरफ़ से आप हसनी सय्यद हैं, शजरा इस तरह है –

सरकार बदीउद्दीन कुत्बुल्मदार रजि. आपकी वालदा सय्यदा फात्मा सानिया उर्फ सय्यदा हाजरा रह. बिन्त सय्यद अबू सालेह रह. वल्द सय्यद अबू यूसुफ रह. वल्द सय्यद जाहिद वल्द सय्यद मोहम्मद वल्द सय्यद आबिद वल्द सय्यद अबू सालेह वल्द अबू यूसुफ वल्द सय्यद अबुल कासिम वल्द सय्यद अब्दुल्लाह महज़ वल्द सय्यद हसन मुसन्ना वल्द सय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम ।"

आपकी तालीम (शिक्षा)

अब बदीउद्दीन की उम्र 4 साल, 4 महिने, 4 दिन की हो चुकी है, पिता को अब बच्चे की शिक्षा का ख्याल आता है । ऐसे बच्चे के लिये किसी ऐसे शिक्षक की आवश्कता थी, जो कोहेनूर (हीरे) की परख रखने वाला जौहरी हो, ऐसा शिक्षक उसी मुल्के शाम में सय्यदना हुज़ैफा शामी के रूप में मौजूद था, बदीउद्दीन को सय्यदना हुज़ैफा शामी के सामने पेश किया गया। सय्यदना हुज़ैफा शामी के रूबरू बदीउद्दीन बैठे है उम्र

है चार साल चार महीने चार दिन, उस्ताद बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ाने के बाद कह रहे है, पढ़ो "अलिफ" और शागिर्द अलिफ़ की तश्रीह (व्याख्या) करने लगता है, उस्ताद का ज़ेहन पशोपेश में पड़ा है, अरे ये छोटा सा बच्चा जिसे अलिफ कहने का शऊर नहीं होना चाहिये था, वो अलिफ़ की तश्रीह कर रहा है। उस्ताद के मुख से अकस्मात ये शब्द निकलते है– "हाज़ा वली युल्लाहे" (ये अल्लाह का वली है) सिर्फ उस्ताद हुज़ैफा ही नहीं बल्कि निदाए ग़ैबी (आकाशवाणी) भी हो रही है – "या बदीउद्दीन अन्ता वली उल्लाहे"

तर्जुमा – ऐ बदीउद्दीन तुम अल्लाह के वली हो ।

वक़्त अल्लाह के हुक्म से करवट बदल रहा है, बदीउद्दीन की उम्र 14 साल की हो चुकी है, अपने उस्ताद की बेइन्तहा मेहनतो, शफ़क़त से आज बदीउद्दीन जय्यद आलिमे दीन (धर्मज्ञाता) हो चुके है और इल्मे रीमिया, कीमिया, सीमिया, हीमिया के ज्ञाता और चारो क़िताबों के हाफिज़ो आलिम हो चुके हैं, इसके अलावा जो चार क़िताबे जिन्नातों पर नाज़िल हुई उनको भी कन्ठस्थ कर लिया है । ये सब चीज़े बदीउद्दीन को GODGIFTED है, अल्लाह ने अपने फ़ज़्लो करम से कुत्बुल्मदार को इन चीज़ों से नवाज़ा है ।

एक रात की बात है सरकारे कुत्बुलमदार नींद के आगोश में थे, चॉदनी खूबसूरत गुलों को और निखार रही थी, गुलों को

छूकर मस्त हवा फ़ज़ा को मुअत्तर कर रही थी, आज हलब की रात कुछ ज़्यादा हीहसीन लग रही थी, इधर कुत्बुलमदार नींद के आग़ोश में थे, यकायक आँख खुल जाती है और ज़ोर–ज़ोर से दुरूद शरीफ पढ़ने लगते है, उनकी आवाज़ से वालिदे बुजुर्गवार की भी नींद खुल जाती है, मामला पूँछते है, मदारे पाक बताते है, आज की रात मेरी तमाम रातों की रानी है । आज की रात मैने अपने सरकार दोनो आलम के मालिको मुख़्तार हुजूर अहमदे मुज्तबा मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़्वाब में ज़्यारत की है, वालिद क़ाज़ी सय्यद किदवतुद्दीन अली हलबी भी इस बात को सुनकर बारगाहे रसूल में दुरूदो सलाम का तोहफ़ा पेश करते है, फिर कहते है ऐ बदीउद्दीन सो जाओ रात बहुत ज़्यादा हो गई है अपने वालिद के हुक्म की तक्मील करते हुए लेट तो जाते है मगर दीदारे नबी की प्यासी आँखों में नींद कहां । रातभर बिस्तर पर करवटे बदलते रहते है, सुबह होते ही दिल में शौक़े दीदार का समन्दर मौजे मारने लगता है, सोचते है–

आँखें दीदारे मदीना को तरसती ही रहीं,
नागवारा को किया कितना गवारा हमने ।

अब मेरी ऑखें दीदारे मदीना करके ही सुकून पाएंगी, इस जज़्बे के पैदा होते ही मुख्तसर सामाने सफ़र लेकर मदीने की तरफ़ चलने को तय्यार हो जाते हैं, वालिदैन की इजाज़त लेकर मदीने की तरफ़ चल देते है –

चल दिये सूए तैबा तो फिर,
अब ग़मे पेचोख़म क्या करें ?

आपका बैतुल मक़दिस में सय्यदना वायज़ीद बुस्तामी रह. से मुरीद होना

सर में सुरूरे हुब्बे नबी, ऑखों में गुम्बदे ख़ज़रा का नक्शा हाथ सुनहरी जालियाँ छूने को बेचैन, लब ज़मीने तैबा को चूमने के लिये बेक़रार, क़दम मदीने की तरफ गामज़न एक अजीब कैफ़ियत थी, एक अजीब मन्ज़र था । हज का मौसम था, क़ाफिले भी अल्लाह के घर का तवाफ करने के लिये रवॉ दवॉ थे, चलते चलते नमाज़ का वक़्त आ गया, आपने नमाज़ अदा की नमाज़ के बाद मुराक़बा किया तो एक आवाज़ आई – "ऐ बदीउद्दीन तुम्हारी आरजूओं और तुम्हारी तमन्नाओं के पूरा होने का वक़्त आ गया है, आगे बढ़ो ।" इस आवाज़ को सुनकर सरकार मदारे पाक फिर चलना शुरू कर देते हैं जब सामने नज़र पड़ती है तो देखते हैं हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम का तामिरकरदा मुसलमानो का पहला किब्ला बैतुलमक़दिस सामने हैं, उन्हें क्या मालूम था कि यहॉ भी एक फज़ीलत उनकी मुन्तज़िर है आप जब अन्दर गये तो देखा के हज़रते सय्यदना बायज़ीद बुस्तामी उर्फ तैफूर शामी रज़ी. (जिनके बारे में हज़रते जुनैद बग़दादी रज़ी. का कौल है कि बायज़ीद रज़ी. का मरतबा औलिया में ऐसा है जैसा फरिश्तो में जिब्रईल का) तशरीफ

फरमाँ है आपके इर्द गिर्द आपके खुल्फा और मुरीदीन का जमघट है बायज़ीदे पाक ने जब आपको देखा तो अपने स्थान से उठकर आपकी पेशानी और आंखों को चूमा फिर फरमाया कि बदीउद्दीन मैने ख़्वाब में देखा के हुजूर (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) एक मजलिस में तशरीफ फरमॉ है मैं भी ख़िदमत में हाज़िर हूँ उन्होने मुझे हुक़्म दिया के जल्द ही तुम्हारे पास एक नेक व्यक्ति आएगा, जिसका नाम सय्यद बदीउद्दीन होगा तुम्हारे पास तुम्हारे पीर की जो नेअमतें हैं वो उसकी अमानत हैं, तुम उसकी अमानत उसे दे देना फिर बायज़ीदे पाक मदारे पाक को बैतुल मक़दिस में मुरीद फ़रमाते हैं और सिलसिलए तैफूरिया की इजाज़तों खिलाफत से नवाज़ते है ।

अल्लाह की इस नेअमत को पा जाने के बाद वो फिर चल देते हैं अल्लाह–अल्लाह वो दीदार का जज़्बा चलते चलते मन्ज़िल क़रीब होती गई और वो वक़्त आया के काबा शरीफ निगाहों के सामने था ।

ज़ियारते हरमैन शरीफैन

मौसमें ख़िज़ाँ में बहार आ गई, दिल की कश्ती जो तूफाने हिज्र से दो चार थी, उसने किनारा पा लिया, आरजूएं पूरी होने का आ गई, यहॉ से दयारे मदीना दूर नहीं । काबे को चूमते हैं, संगे अस्वद को बोसा देते है, अब ज़्यादातर वक़्त काबे के तवाफ़ और इबादते इलाही में गुज़र रहा है, कई दिन हो चुके हैं । एक

मर्तबा वो इबादते इलाही में मश्गूल थे, तभी आवाज़ आई "बदीउद्दीन अपने जद्दे अमजद की ज़ियारत के लिये जाओ।" ये सुनकर सरकार उठते हैं और मदीने को चल देते हैं । उनका दिल जो इश्क़े रसूल (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) का गहवारा हैं, उससे पूँछते हैं –

ऐ मेरे दिल ये बता, हाल तेरा क्या होगा ।
सामने आंखों के जब गुम्बदे ख़ज़रा होगा ।

मगर दिल ख़ामोश था । जब ऑखों के सामने गुम्बदे ख़ज़रा आया, ऑखों ने सुनहरी जाली का नज़ारा किया, वाह रे गुम्बदे ख़ज़रा तुझ पर कायनाते आलम की तमाम खूबसूरत इमारतें कुर्बान तेरे हुस्न को ताजमहल भी सौ–सौ सजदे करता है । तू तश्ना ऑखों का आबे ज़मज़म है । वो इन्सान सबसे बड़ा अभागा है जिसने तेरे दर्शन नहीं किये और वो सबसे ज़्यादा भाग्यवान जिसने तेरे दर्शन किये । वो जीवन सबसे बेहतर है जो तेरी अंगनाई में गुज़रे और वो मौत सबसे आला है जो तेरे साए में हो ।

बस गई ख़ज़रा की तस्वीर मेरी ऑखों में,
है मेरे ख़्वाब की ताबीर मेरी ऑखों में ।

ऑखों के सामने ख़ज़रा का पुरनूर नज़ारा था, ऐसा नज़ारा देख कर किस आशिक़ की आँखों से इश्क के झरने नहीं बहने लगते, ऑखों से अश्कों के मोती गिर–गिर कर ज़मीने

तैबा को चूमने लगते हैं । ये आँखों के आँसू भी ख़ूब हैं, थमने का नाम ही नहीं ले रहे, ये भीगी ऑखें पता नहीं किस चीज़ की तमन्नाई है, एक आशिक़ अपने महबूब से दीदारे जमाल की भीख मॉग रहा है, एक दीवाना अपने करम फरमॉ पर निसार हो जाने के लिये तैयार है, बेचैनो बेक़रार, ऑखों में तस्वीरे यार, प्रेम के समुद्र से दिल की नय्या दो चार, निगाहों के सामने वज्हे कुनफ़कॉ का दरबार, जिनकी दोनो आलम में सरकार, उधर नबियों के सरदार, इधर वलियों का ताजदार, उधर दोनों आलम का मुख़्तार, इधर दोनो आलम के मुख़्तार का शहकार, एक फरमॉ बरदार बेटा अपने बाप से मिलने आया है, एक सआदतमन्द व फ़रमा बरदार नाती अपने नाना की बारगाह में इश्को इरफ़ान की भीख़ तलब करने आया है । लेकिन जैसा के हर इश्क की दास्तान में होता है वैसा ही हुआ महबूब के दीदार तो हुए मगर इन्तज़ार करना पड़ा । वो लबे मदार जो क़दमें नाज़ को चूमने के लिये बेचैन थे, दुरूदो सलाम का उपहार बारगाहे नबवी में पेश किया करते थे, एक मरतबा इसी हालत में थे कि महबूबे ख़ुदा, फख़े आदम व बनीं आदम बाइसे तख्लीक़े इन्सो जाँ वज्हे कुनफ़कॉ रहमते आलम नूरे मुजस्सम नबीये मुकर्रम शफीए दो आलम मोहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के चेहरए पुर अनवर की ज़ियारत हो गई । दिल के मुरझाए हुए गुल खिल गए, रसूले ख़ुदा को देखा तो देखते रह गए, या रसूलल्लाह आपके हुस्न पर युसुफ़ अलैहिस्सलाम को

भी नाज़ है, ख़ुदा ने आपकी तख़्लीक़ सारी कायनात से अलग फरमाई है, आपके हुस्नो जमाल को देखकर चन्द्रमा भी अपने आपको बादलों के चिलमन में ढंक लेता होगा यक़ीनन आपका हुस्न आपके आशिक़ों के दिलों को सीने में नहीं रहने देता होगा, जैसा के अल्लमा अदीब मकनपुरी का नज़रिया है।

ऐ हुस्ने कायनात, फिदा तुझपे क्या करें,
हम दिल तो छोड़ आए, दयारे हुज़ूर में ।

रसूले पाक ने अपने प्यारे धर्म प्रचारक बदीउद्दीन को क़रीब में बुलाया और सीने से लगालिया ये मन्ज़र देखकर कायनाते आलम की तमाम मख़्लूकात बदीउद्दीन के नसीब पर फख़्र करती नज़र आ रही हैं, रसूलेपाक का सीना मदारेपाक केसीने से मिल गया । रसूलेपाक के सीने से मदारेपाक का सीना मिलते ही सातों आकाश और पाताल की तमाम छुपी हुई चीज़े बदीउद्दीन को नज़र आने लगीं, ज़मीनों आसमान के तमाम तब्क़ात आज क़त्बुल्मदार पर रोशन हो गये, आज मदारेपाक को विलायत की सनद और डिग्री भी हांसिल हो गई।

मदारे पाक का रसूलेपाक (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) से बराहे रास्त मुरीद होना और हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) का मौला अली के सिपुर्द फ़रमाना

सरकार मदारे पाक रज़ीअल्लाह अन्हो को रसूले पाक (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) अपने दस्ते हक़ परस्त पर मुरीद फ़रमाते हैं, फिर मौला अली के सिपुर्द फरमाते हैं, ऐ अली ये तुम्हारी औलाद मुझसे इश्को इरफान की भीख तलब करने आयी है, इसकी तरबियत करो और इसको फ़नाफ़िल्लाह की मन्ज़िल तक पहुँचा दो, मौला अली कुत्बुलमदार की तरबियत फ़रमाते हैं, फिर वो हज़रते मेहंदी अलैहिस्सलाम के हवाले कर देते है, हज़रते मेहंदी अलैहिस्सलाम भी सरकार मदारेपाक को अपने उलूम से नवाज़ते हैं, हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) से मदारेपाक को बराहे रास्त मुरीद होने का शर्फ हांसिल हैं, जो किसी और वली को हांसिल नहीं । इस निस्बत को निस्बते उवैसी कहतेंहैं इसी निस्बत को हांसिल करने के लिये अकाबिर औलिया अल्लाह ने मदारेपाक से बैअत की है । जिनमें मीर अशरफ़ जहॉगीर समनानी मख्दूम जहाँनियाँ जहॉ गश्त भी है रवायतों में है कि मदारेपाक के 1 लाख 24 हज़ार ख़ुल्फा सारी दुनियाँ में फैले हैं ।

हिन्दुस्तान की तरफ रवानगी

सरकार का वक़्त इसी तरह मदीने पाक में गुज़र रहा था, कि आपको रसूले पाक (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) की ज़ियारत हुई, हुजूर (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) ने हुक़्म दिया –

"ऐ बदीउद्दीन तुम्हें अल्लाह ने जो इस अज़ीम मरतबए विलायत पर फायज़ किया है, उसकी परीक्षा का समय आ गया है, ऐ मेरे हृदय के टुकड़े बदीउद्दीन तुम भारत जाओं वहॉ इस्लामी शिक्षा का प्रचार–प्रसार करो, वहाँ की ज़मीन को तुम्हारी आवश्यकता है ।"

नबी (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) का हुक़्म पाते ही मदारे पाक हिन्दुस्तान की तरफ़ चल देते हैं, जब बन्दरगाह पर आते हैं तो जहाज हिन्दुस्तान की तरफ आने के लिये तैयार था, उसमें बैठ जाते हैं ।

वो दौर जिस दौर में लोग हिन्दुस्तान से इमली, आम और इस जैसी तमाम चीज़ों का व्यापार अरब में किया करते थे, और वहॉ से खजूरें इत्यादि लाकर हिन्दुस्तान के विक्रेताओं को ऊँचे मूल्य पर बेचते थे, उस जहाज में तक़रीबन सभी हिन्दुस्तानी थे और वो अकेले अरबी उन्होने इस्लाम धर्म की शिक्षाओं से लोगो को अवगत कराया । लोगों ने जब उनकी बातें सुनीं तो उनका मज़ाक बनाने लगे ।

अल्लाह के किसी भी वली का जब दिल दुखता है तो दिल दुखाने वालों को अपना विनाश देखना ही पड़ता है, और यही हुआ समुद्र में भयंकर तुफान उठा जहाज छिन्न–भिन्न हो गया । तमाम लोग समुद्री तुफ़ान की चपेट में आ गये और डूब गये, लेकिन सरकार मदारेपाक एक तख़्ते के सहारे किनारे तक पहुँच गये, चारों तरफ अथाह समन्दर, समुद्री जीवों का भय, भूख प्यास की शिद्दत इन सब परेशानियों से जूझते हुए वो साहिल तक पहुँचे थे, मगर दिल को ये विश्वास था कि जिस मुख़्तारे कुल मोहम्मदे अरबी (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) ने मुझे यहाँ भेजा है वही हमारे प्राणों की रक्षा करेंगे ।

हिन्दुस्तान में आगमन

सन् 282 हिजरी का वक़्त था । सरकार मदारे पाक हिन्दुस्तान के साहिल पर पहुँच चुके थे । किनारे पहुँच कर देखा के एक बड़ी नूरानी शक्ल वाले बुजुर्ग खड़े हैं, उन्होने अर्ज़ किया मेरे साथ चलिये, आप उनके साथ चल दिये, थोड़ी दूर चलने के बाद आपने देखा एक बहुत बड़ा आलीशान महल बना हुआ है, जिसके आसपास बग़ीचा है, जिसमें तरह–तरह के पुष्प लगे हुए हैं, आप जब उस बाग़ से होते हुए महल के क़रीब पहुँचे तो देखा के एक खूबसूरत दरबान उसके दरवाज़े पर बैठा हुआ हैं, आपको देखकर वो दरबान खड़ा हो गया और उसने कहा –"अस्सलामो अलयकुम या बदीउद्दीन, आइये आपका

हमें बड़ी देर से इन्तेज़ार था ।" मदारे पाक को बड़ी हैरत हुई मैं इस देश में अजनबी हूँ, न मैं यहाँ किसी को जानता हूँ, न कोई मुझे, लकिन ये कौन शख़्स है, जो मेरा नाम जानता हैं, आपने दरबान से पूछा तुमने मेरा नाम कैसे जाना ?

उसका जवाब था, "आपको कौन नहीं जानता, धरती आकाश वाले सब आपको जानते हैं, ये सुनकर वो आश्चर्यचकित हो जाते हैं, फिर जब आगे बढ़ते हैं तो एक और दरवाज़ा पाते हैं, वहॉ भी दरबान खड़ा था, उसने भी वैसे ही सलाम किया और ऐसे ही सात दरवाजे राह में पड़े और हर दरवाजे पर एक दरबान बैठा मिला और उसने भी सलाम किया –"अस्सलामों अलयकुम या बदीउद्दीन" ।

इन्सानी ज़रूरतो से बेनियाज़ी

सातों दरवाज़े पार होने के बाद आप देखते हैं के सरवरे आलम (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) एक तख़्त पर जलवा फ़रमा हैं रसूले पाक (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) ने उन्हें अपने क़रीब में बैठाया फिर 9 लुक़्मे जन्नती खीर के खिलाए और आबे कौसर पिलाया और एक लिबास पहनाया फिर अपना नूरानी हाथ बदीउद्दीन के चेहरे पर फेर दिया ।

जन्नती खीर खाने से मदारे पाक की ज़िन्दगी भर की भूख ख़त्म हो गई और आबे कौसर पीने से प्यास । और वो लिबास जो सरकारे मदीना (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) ने

पहनाया था, वो न कभी मैला हुआ न पुराना बल्कि हमेशा साफ़ सुथरा रहा । नबी करीम (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) के हाथ फेर देने से मदारे पाक का चेहरा इतना रौशन और मुनव्वर हो गया कि सात–सात या कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि सत्तर–सत्तर नक़ाब चेहरे पर डालने पड़ते थे ।

मदारे पाक फिर आगे बढ़े एक पहाड़ पर खड़े होकर दुआए बश्मुख का विर्द करने लगे तो आसमान से एक तख़्त नमूदार हुआ, आकाशवाणी हुई –"ऐ बदीउद्दीन इस पर सवार हो जाओ ।" ये आवाज़ सुनकर मदारे पाक उस तख़्त पर सवार हो जाते हैं वो तख़्त उड़ने लगता हैं, किताबों में है कि उस तख़्त को मुवक्किल लेकर उड़ा करते थे ।

इस्लामी शिक्षा का प्रचार

वो जगह जहाँ रसूलल्लाह (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) ने मदारे पाक को 9 लुक़्में शीरबिरंज के खिलाए थे और आबे कौसर पिलाया था, वो स्थान उस दौर का बंदरगाह खंबात था, जो गुजरात में है वहाँ से वो महल भी ग़ायब हो गया और वो बग़ीचा और दरबान भी ।

किताबों में हैं यह सब आलमे अरवाह में (आत्माओं द्वारा) हुआ उस जगह पर आज भी मदारेपाक का चिल्ला मौजूद है और हज़रते ख़िज़्र पैग़म्बर अलैहिस्सलाम का चिल्ला मौजूद है।

मदारे पाक दीने इस्लाम की तब्लीग़ करते हुए गुजरात के हर इलाक़े में पहुंचते हैं बड़ौदा, सूरत, आनंद, अहमदाबाद होते हुए आप अजमेर पहुँचते हैं ।

अजमेर आगमन और अजमेरवासियों का कष्ट निवारण

अजमेर जिसका नाम पहले अजयमेरू था । आप तब्लीग़े दीन करते हुए अजमेर पहुँचे, वहाँ आपने कोकिला पहाड़ी पर क़याम फ़रमाया ।

ये वो दौर है, कि जब सय्यदना ग़रीब नवाज़ अजमेरी रजि. अन्हों की पैदाइश भी नहीं हुई थी, अजमेर की कोकिला पहाड़ी जहाँ अब तो थोड़ी चहल–पहल है, उस समय तो वहाँ घना जंगल होगा । जंगली जानवरों का भय, सर्प का डर, डाकुओं, चोरों का ख़ौफ़ मगर यह अल्लाहवाले हैं, इन्हें क्या डर, क्या ख़ौफ़ । इनके लिये तो कुरआन कह रहा है–

"अला इन्ना औलिया अल्लाहिला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुमयहजूनून ।"

खबरदार अल्लाह के वलियों पर न तो कोई ख़ौफ तारी हो सकता है न ही कोई ग़म । ऐसे ख़ौफ़नाक़ माहौल में वो उस पहाड़ी पर ठहर गए । रात का कुछ ही पहर बीता होगा कि कानो से नारए तकबीर की पुरज़ोर सदाएं आकर टकराने

लगती है । ईमान वाले बेदार हो जाते है । ये कौन लोग है जो इस बियाबान जंगल में अल्लाहवालों के नारे को बुलंद कर रहे है ।

मालूम हुआ कि इसी पहाड़ी पर मुजाहिदे इस्लाम सय्यदना हुसैन ख़िंगसवार और उनके साथी शोहदा (रिज़वानुल्लाह अन्हु अज़मईन) की बेगौरो कफन लाशे पड़ी है ।

फज्र का वक़्त होता है, मदारे पाक़ नमाज़े फज्र अदा कर रहे है । सुबह की पहली किरण अजमेर की कोकिला पहाड़ी को और सुन्दर दर्शा रही है । तभी सामने से चंद लोग आते दिखाई देते है । आते ही अर्ज़ करते हैं, हम सब आपकी सेवा में एक निवेदन लेकर आए है, अगर हो सके तो आप स्वीकार कर लिजिएगा । मदारे पाक़ फरमाते हैं, "कहों क्या मामला है।" वो अर्ज़ करते है, आपके आने से पहले यहाँ कुछ लोग आए थे, जो अपने आप को मुसलमान कह रहे थे, उन्होने कुछ नई बाते हमारे सामने पेश की वो कहते थे कि अन्धविश्वास छोड़ दो एकेश्वरवादी बनो ईश्वर को एक मानों उसी को पूजो मूर्ति पूजा पाखंड है, जो मूर्तियाँ अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकतीं वो तुम्हारा कष्ट निवारण क्या करेगी ।

ये बातें हमें पसन्द न आई हमने उनसे जंग की और उन चालिस लोगों को क़त्ल कर दिया । जब हम सब उनको क़त्ल करके वापस घर पहुँचे और शाम हुई तो उनकी लाशों से नार

ए तक़बीरो रिसालत की सदाएं बुलंद होने लगीं, जिनको सुनकर लोग बहरे होने लगे और हामिला (गर्भवति) औरतों के हमल ज़ाये होने लगे । ये सिलसिला आज भी जारी है । हर शाम यहाँ नारा ए तक़बीरों रिसालत की गूंज सुनाई पड़ती हैं, जिससे हमारा जीना दुश्वार हो गया है, आप कृपा करके यहाँ से चले जाइये । हो सकता है आपके आने से भी हम पर कोई मुसीबत टूटे ।

कुत्बुल्मदार ने उनकी आखों में ख़ौफो हिरास के काले बादल छाए हुए देखे उनकी परेशानी उनकी आखों से ज़ाहिर थी । मदारे पाक का जवाब था, "हम रहमतुल्लिल्आलमीन के घराने वालें हैं, हम दुख बर्दाश्त करना जानते हैं, दुख देना नहीं जानते, तुम सब बेफिक्र होकर अपने अपने घरों में जाओं ये आवाज़े आज से बंद हो जाएंगी ।

उन सबको बड़ा आश्चर्य हुआ, ये अकेला इन्सान इतनी भयानक बला को दूर करने की बात कर रहा हैं, मगर इसके अलावा उनके पास कोई चारा न था, वो लोग अल्लाह के भरोसे अपने–अपने घर लौट जाते हैं ।

अजमेर में शहीदों की लाशें

सरकार मदारेपाक गुजरात में दीने इस्लाम की तब्लीग़ करते हुए अजमेर पहुँचे थे । बहुत से लोग मुसलमान होकर उनके साथ हो लिये थे । मदारेपाक़ उनको हुक्म देते हैं,

"जाओं और पहाड़ी पर बेगौरो क़फ़न चालिस शहीदों की लाशें पड़ी हैं, उन्हें दफ्न कर दो ।" उनके ख़ुल्फा फौरन चलते हैं, देखते हैं, शहीदों के चेहरों से अन्वारे इलाही फूट रहा हैं, शहादत को तो बहुत वक़्त हो गया, मगर मालूम होता था, अभी ये शहीद हुए हों उनकी कटी गर्दनें इस्लाम की फलाहो बहबूदी और इस्लाम की कामयाबी का सवाल कर रही थी, और ख़ुल्फा तसव्वुर में अजमेर को इस्लाम के तब्लीग़ी मरकज़ के रूप में देख रहे थे । और आज अल्हम्दुलिल्लाह अजमेर इस्लाम का तब्लीग़ी मरकज़ हैं, फिर मदारेपाक के ख़ुल्फा उनकी तदफीनों तक्फीन कर के वापस लौटते हैं ।

अजमेर के लोगों का दीने इस्लाम क़ुबूल करना

जब शाम हुई चारों तरफ़ ख़ामोशी छाई हुई थी, अजमेरवाले रोज़ बरोज़ होने वाले इस हादसे से डरकर अपने कानो में रूई लगाकर लेट चुके थे मगर जो लोग बारगाहे मदारेपाक से लौटे थे, डरते–डरते उस आवाज़ को सुनने की कोशिश कर रहे थे, वो सोच रहे थे, क्या वाक़ई एक मुसलमान का कौल सच्चा हो सकता हैं, जो वादा रसूल की आले पाक ने हमसे किया है, क्या वो वफ़ा होगा मगर दिल की धड़कने उस रात की सुब्ह को सुकून पा गई, जिस रात तक़बीरो रिसालत की आवाज़ पहाड़ी से न आई ।

अजमेरवासी खुशी से उछल पड़े, जो धर्म हुसैन ख़िगसवार लाए थे, वो भी सच्चा था और वहीं धर्म आज कुत्बुलमदार लाए हैं, यक़ीनन यही धर्म सच्चा है, यही धर्म हमें शान्ति प्रदान कर सकता है और यह धर्म एकेश्वरवदी है, जो ईश्वर को प्यारा हैं।

आयत – "इन्नददीना इन्दल्लाहिल इस्लाम"

तर्जुमा – "ईश्वर को इस्लाम धर्म प्यारा है ।"

हज़ारो अजमेरवासी कोकिला पहाड़ी पर पहुँच जाते हैं और मदारेपाक के हाथों से दीने इस्लाम का तोहफा प्राप्त कर लेते हैं । सब पढ़ लेते है –

"अश्हदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाह व अश्हदो अन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलहू"

कोई पूज्य नहीं अल्लाह के अलावा और मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं ।

उसके बाद वही कोकिला पहाड़ी मदार टीकरी के नाम से मशहुर हो गई, जहाँ पर सरकार मदार का एक चिल्ला भी है जो दर्शनार्थियों के लिये जन्नत से कम नहीं ।

हज़ के लिये रवानगी

मदारेपाक हिन्दुस्तान के हर गली कूंचो में इस्लाम धर्म का पैग़ाम सुना रहे हैं । हर दीन–दुखी, अमीर–ग़रीब,

गदा–बादशाह सब आपसे दिल का मुद्दआ पा रहे है ।

मदारे पाक़ का दरबार भी क्या दरबार हैं, जहाँ दीवाना आ रहा है तो होशमन्द होकर जा रहा है, जहाँ अन्धे आ रहे हैं तो रौशनी पा रहे है, जहाँ बाँझ औरतें औलाद पा रही हैं, जहॉ भिखारी आ रहे हैं, तो दाता बने जा रहे हैं, ये दरबार सभी के लिये खुला हैं । यहाँ अमीर ग़रीब, धर्म, जाति, भेदभाव, छुआछूत, ऊंचनीच कुछ नहीं देखा जाता । हॉ अगर कुछ देखा जाता हैं तो दुखियों का दर्द देखा जाता हैं, मदारेपाक भारत में रोतों को हंसाने के लिये आए हैं, अपने रसूल का पैग़ाम सुनाने के लिये आए हैं सारे हिन्द में कुछ ही दिनों मं इस्लाम सूरज की तरह चमकने लगा है । हिन्दुस्तान का ज़र्रा–ज़र्रा कलमए शहादत की गूंज से गूंजने लगा है । मदारेपाक देखते है हज का मौसम आ गया है, मुसलमान ख़ानए काबा के तवाफ के लिये चला जा रहा है, सोंचते हैं हम क्यों महरूम रहें, सरकार मदारेपाक अपने ख़ुल्फा के साथ हज के सफर में चल दिये ।

मुर्दा खोपड़ी जीवित हो गई

सरकार हज के लिये जा रहे हैं, रास्तें में एक मुर्दा खोपड़ी पर नज़र पड़ती है, ये मुर्दा खोपड़ी सालों से दर ब दर की ठोकरें खा रही हैं, लगता है ये मदारेपाक ही की मुन्तज़िर है मदारेपाक उस खापड़ी की तरफ निगाहे इल्तिफात उठाते हैं,

पूछते हैं–

"मन अन्ता या जमजमा कुसिया अलैनामिन कससेकल मुब्हिमह"

"ऐ सर तू कौन है, मुझे बता कि तेरा हाल क्या है ।"

ये सुनकर वो खोपड़ी बोलने लगती है, कहती है, ऐ अल्लाह के नेक बन्दे मैं एक मज़दूर था मेहनत मज़दूरी से अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करता था, इसी हाल में मेरी मृत्यु हो गई । बारह बरस हो चुके हैं मैं तरह–तरह के अज़ाब में मुब्तिला हूँ ।

सरकार बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में उस मुर्दा खोपड़ी के लिये दुआ फरमाते हैं, दुआ अर्श आज़म से टकराती हैं, अल्लाह उनकी दुआ कुबूल फरमाता हैं और उसकों जिस्म अता फरमाता हैं, ज़िन्दा होने के बाद वो मुर्दा खोपड़ी कल्मए शहादत पढ़ लेती हैं, "लाइलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदुर्ररसुलल्लाह" वो मुर्दा खोपड़ी जब अपनी असली हालत की तरफ आ गई तो उसका नाम ही जमजमा पड़ गया । जो 9 साल तक ज़िन्दा रहा और पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की इबादत में मश्गूल रहा ।

ख़ानए काबा में आपकी पुरजोश तक़रीर

मदारेपाक मक्का पहुँचते हैं और वहॉ एक पुरजोश तक़रीर फ़रमाते हैं ।

मुसलमानों हिन्दुस्तान की ज़मीन एक ऐसी ज़मीन हैं जहाँ इस्लामी शिक्षा की तरफ लोग रूजू हो रहे हैं, वहाँ दावते इस्लाम का काम ख़ूब तेज़ी से हो रहा है, अभी तक इस्लाम का कोई प्रचारक सय्यद हुसैन ख़िगसवार और मेरे अलावा वहाँ नहीं पहुंचा है, मगर जब मैं वहाँ पहुँच चुका हूँ और वहाँ का माहौल देख चुका हूँ तो आप सभी को चाहिये कि हमारे साथ दीने इस्लाम की तब्लीग़ के लिये निकलें और लोगों को रसूले पाक का पैग़ामे मुहब्बत सुनाएं ।

सरकार की तक़रीर से वहॉ के लोग बहुत मुतास्सिर हुए और सैकड़ो लोग मदारेपाक के साथ हो लिये ।

बग़दाद में गौसेपाक से मुलाक़ात और उनकी बहन बीबी नसीबा

बग़दाद, एक ऐसा शहर जहॉ औलिया व अम्बिया और अस्हाबे रसूल का एक जम्ऐ ग़फ़ीर मौजूद है, जहॉ पर एक तरफ जुनैद बग़दादी की ख़ानक़ाहे आलीशान हैं तो दूसरी तरफ अल्लाह के नबियों के कुबूर और निशान हैं । उस सरज़मीने पुरबहार में मदारेपाक (रज़ि.) पहुँचते हैं उन्हें मालूम होता है के सरकारे ग़ौसेपाक रजि. अन्हु जो उस शहर ही के क्या, सारी कायनात के गौस हैं, उन पर जलाल की कैफियत तारी हैं वो जिस किसी परिन्दे को आस्मान पर उड़ते हुए देख

लेते हैं वो जल भुनकर ज़मीन पर गिर पड़ता हैं, जब मदारेपाक ने ये सुना तो सय्यदना मुहिउद्दीन सुब्हानी अब्दुल कादिर जीलानी गौसे आज़म रजि. के पास तशरीफ ले जाते हैं, फरमाते हैं, "ऐ अब्दुल क़ादिर हमारे जद्दे करीम (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) रहमतुल्लिलआलमीन हैं, जब गौसेपाक ने इन कल्मात को सुना तो सारा जलाल जमाल में बदल गया ।

उसी शहर में हज़रत ग़ौसे पाक की एक बहन भी हैं, जिनका नाम सय्यदा बीबी नसीबा हैं, निकाह को बरसों हो गई, मगर गोद अभी तक सूनी हैं ।

बीबी नसीबा जो गौसुल्आज़म की बहन है, जो नबी के गुलशन की एक ख़ूबसूरत कली है, जिनका घराना हाशमी है, मदनी है, उनको ख़बर पहुँची सरकार बदीउद्दीन कुत्बुल्मदार (रजि.) बग़दाद में तशरीफ ला चुके हैं, ये सुनकर वो दौड़ती हुई मदारे पाक की बारगाहे बेकस पनाह में आई, दरख़्वास्त की –

"ऐ विलायत के ताजदार, ऐ दुखियों के ग़मख़्वार, ऐ कुत्बे दीं कुत्बे जहॉ कुत्बुल्मदार मैं ग़मों से दो चार आपकी ज़ाते आली पुरवकार आपका चेहरा पुरनूरों पुरअनवार दुआ कीजे, हलबी सरकार मैं औलाद पाऊँ नेककार मेरे भाई ने किया इन्कार तेरी औलाद का है कुत्बुल्मदार पर दारोमदार मैं दौड़ी आपके दरबार बेइख्तियार, बेक़रार, दुआ कीजै कुत्बुल्मदार मैं औलाद पाऊॅ नेककार सूए नसीबा देखते हैं सरकार फिर लौहे महफूज़ का मुशाहिदा करते हैं मदार फिर कहते हैं "मत रो ऐ

नसीबा ज़ारो क़तार तू दो औलादें पाएगी, पुरवक़ार नाम रखना सय्यद अहमद, सय्यद मुहम्मद शानदार कहती रहना दममदार बेड़ा पार कुन करम बहरे खुदा, सय्यद बदीउद्दीं मदार कुन करम बरहाले मा या सय्यदी कुत्बुल्मदार आप दुआ फरमॉ कर आगे का सफर करते हैं ।

अफगानिस्तान में कुऐं से पानी का सैलाब उमड़ना

सरकार दीने रसूल की गाम–गाम तब्लीग़ कर रहे हैं, हर एक आपसे फैज़याब हो रहा है । आप अफगानिस्तान के शहरे काबुल में पहुँचते है, वहॉ सरकार के ख़ुल्फा को पानी की ज़रूरत पेश आई सरकार ने बताया क़रीब में एक कुआँ हैं, जाओं वहाँ से पानी ले आओ । आप के ख़ुल्फा आपकी आज्ञा का पालन करते हुए कुएं से पानी लेने के लिये चल देते हैं । मुसलमान मदारियों का क़ाफिला कुएं की तरफ जा रहा हैं, कुएं पर पहुँचने के बाद जब वो अपनी डोल कुएं में डालने के लिये रस्सी बाँधने लगते हैं तो वहाँ के कुफ़्फ़ार दौड़ते हुए आ जाते हैं, कहते हैं कि तुम मुसलमान हो, हम तुम्हें पानी नहीं भरने देंगे। ये सुनकर सभी ख़ुल्फ़ा नामुराद वापस लौट आते है ।

सरकार मदार पाक अपनी मस्नदे विलायत पर विराजमान हैं, ख़ुल्फ़ा आपके सामने खड़े हैं, सारी बातें सुनने के बाद ज़बाने मदारियत से ये हुक़्म होता हैं, "जाओं कुएं की जगत पर

खड़े होकर कह देना "ऐ कुएं के पानी तुझे साक़िये कौसर के नवासे शहीदे करबला की औलाद बदीउद्दीन ने बुलाया है ।" ख़ुल्फा वापस कुएं की तरफ जाते हैं और कहते हैं "ऐ कुएं के पानी तुझे नबी के नवासे हुसैन की औलाद ने बुलाया हैं ।" ये सुनकर कुएं में सैलाब आ जाता है, कुएं का पानी धीरे–धीरे ऊपर आने लगता हैं और कुएं से बाहर आने के बाद विलायत के ताजदार के पास जाने लगता हैं, ये माजरा देखकर अहले काबुल हैरत में पड़ जाते हैं, कहते हैं यक़ीनन ये कोई अल्लाह का मुक़र्रब बन्दा हैं, जिसके हुक़्म से कुएं का पानी भी ताब न लाकर के कदम बोसी के लिये निकल खड़ा हुआ ।

वो जानता था साक़िये कौसर के लाल हैं,
फिर क्यों न बात मानता पानी मदार की ।

ये देखकर तमाम काबुल के लोग सरकार के कदमों में गिर पड़ते हैं और इस्लाम की दौलत पा जाते हैं, मदारे पाक उनकी तरबियत के लिये कुछ ख़ुल्फा छोड़ कर आगे के लिये चल देते है ।

अन्धी की आँख में रोशनी हो गई

इसी शहरे काबुल में एक ग़रीब इन्सान रहता था, जिसकी एक बेटी थी, एक ही औलाद थी और वो भी नाबीना । हर वक्त रोता, तड़पता रहता था, हाय अल्लाह ये लड़की जात कौन इससे ब्याह करेगा, मेरे बाद इसकी कैसे ज़िन्दगी बसर

होगी । उसने मदारेपाक का नाम सुना था, पता चला वो काबुल में तशरीफ फरमा हैं, वो रोता, तड़पता अपनी बेटी के साथ बारगाहे मदार में हाज़िर होता है, सरकार को उसकी बेचारगी पर रहम आ जाता है, दुआ के लिये हाथ उठाते है, ख़ुदा मदारे पाक की दुआ से उस अंधी की ऑखें रोशन कर देता है ।

शेख़ मुहम्मद लाहोरी

ये लाहोर के रहने वाले हैं, जब से मदारेपाक का नाम सुना हैं, दीदार के तालिब हैं, हज के मौसम में हज के इरादे से चलते हैं, उनको मालुम होता हैं कि मदारेपाक सूरत में क़याम पिज़ीर हैं, दौड़ते हुए बारगाहे मदारियत में हाज़िर होते हैं सरकार अपने रूख़ से एक नक़ाब उठाते हैं, जिसे देखंकर वो बेहोश हो जाते हैं, जब होश आता है तो मदारेपाक के हाथों पर बैअत हो जाते हैं ।

धीरे–धीरे सभी हज के क़ाफीले सूए मक्का पहुँच रहे हैं और एक वक़्त वो आया के सारे क़ाफिले मक्का पहुँच गये शेख को ये ख़्याल आया कि मैं तो हज के इरादे से चला था, आज अगर मैं भी उन क़ाफिलों के साथ निकल गया होता तो मैं भी आज ख़ानए काबा का तवाफ़ कर रहा होता । ये सोंच ही रहे थे कि मदारेपाक को इसकी ख़बर हो गई, मदारूल्आलमीन ने फरमाया, "ऐ मुहम्मद लाहौरी क्या तुम ये सोच रहे हो कि हमारा हज यहाँ ठहर जाने से ठहर गया ।" शेख ने अपनी सोच का इक़रार किया ।

मदारेपाक फरमाते हैं "ऐ शेख़ तुम मेरा तवाफ कर लो, तुम्हारा हज हो जाएगा, शैख मुहम्मद लाहौरी अपने पीर के हुक्म को बजा लाते हैं, तवाफ़ करना शुरू करते हैं, तो देखते हैं कि मदारे पाक की जगह ख़ानए काबा हैं जिसका वो तवाफ़ कर रहे हैं, तवाफ़ पूरा हो जाने के बाद देखते हैं कि फिर मदारे पाक की ख़िदमत में हाज़िर है । दिल तशफ़्फ़ी पा जाता है, मगर कुछ दिनो बाद फिर ये ख़्याल आता है, पता नहीं हमारा हज हुआ भी या नहीं हुआ । अगर हम अरब जाते तो सई करते शैतान को कंकर मारते "मनज़ारा कब्री वजबत लहू शफाअती" के मुस्तहक़ बनते बारगाहे नब्वी में हाज़री देते । सरकार मदारे पाक को इस बात का भी इरफान हो जाता है । सरकार शैख को अपने पास बुलाते हैं और उनकी आखों पर अपना हाथ फेर देते हैं ।

शेख देखते है कि वो खानए काबा में हाज़िर हैं, वो तवाफ करते हैं, सई करते हैं, फिर शैतान को पत्थर मारते हैं, तमाम अरकाने हज अदा करते हैं मदीने में हादिये दो जहाँ आज (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) की क़ब्रे अनवर पर हाज़री देते हैं जब पूरी तरह दिल मुत्मईन हो गया तो फिर अपने मुर्शिद की ख़िदमत में अपने को पाया ।

मदारे पाक का विसाल

इस जैसे सैकड़ो वाक़यात किताबों में मौजूद हैं, सरकार

मदारे पाक की उम्र 596 साल की हुई जिसमें ज़िन्दगी का हर दिन एक नई करामात लेकर आता हैं, अगर सरकार की तमाम करामातों, वाक़यात लिखें जाएं, जो दुनियॉ भर की तमाम किताबों में बिखरे पड़े हैं, तो ये एक इन्सान के लिये बड़ा मुश्किल है । दुनियॉ की तक़रीबन हर ज़बान की किताबें आपकी अज़मत का डंका पीट रही हैं । जैसा की नबी (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) ने हुक्म दिया था, कि बदीउद्दीन हिन्दुस्तान में कन्नौज के क़रीब एक तालाब होगा जिसमें "या अज़ीज़ों" की आवाज़ आती होगी, वहीं तुम्हारी आख़री क़यामगाह होगी । मदारेपाक जब इस तालाब के पास पहुँचे तो उससे "या अज़ीज़ो" की आवाज़ आना बंद हो गई और वो तालाब भी सूख गया, फिर वहीं जगह आपकी मरक़द बनीं किताबों में हैं कि अपको फरिश्तों ने गुस्ल दिया । आपकी वफात 17 जमादिउल अव्वल सन् 838 हि. में मकनपुर शरीफ में हुई ।

आपके ख़ुल्फाए बावक़ार रहमतुल्लाह अलैहिम

हज़रत सय्यद मोहम्मद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रहमतुल्लाह अलैह – ये सरकार के ख़ुल्फा में एक मुन्फरिद हैसियत रखते हैं, सय्यदा बीबी नसीबा के बेटे हैं जो मदारे पाक की दुआ से पैदा हुए थे । इन्हें जानेमन जन्नती कहने की वजह ये है के एक मरतबा ये छत पर खेल रहे थे, खेलते हुए वो ज़मीन पर आ गिरे जिससे इनकी मौत हो गई, बीबी नसीबा को जब ये ख़बर हुई तो बदहवासी के आलम में रोते बिलखते

मदारेपाक के पास लेकर आई, अर्ज़ की या मदार मैने इस बच्चे को आपकी ख़िदमत में देने का इरादा किया था, लेकिन इसको अल्लाह ने उठा लिया सरकार मदारेपाक ने सय्यद मोहम्मद की मिट्टी से कहा "उठो ऐ जाने मन जन्नती", इतना कहना था, सय्यद मोहम्मद कल्मए श्हादत पढ़ते हुए उठ खड़े हुए ये करामत देखकर बीबी नसीबा ने अपने दोनो बेटे मदार के साथ कर दिये ।

सय्यद अहमद बादिये पा रहमतुल्लाह अलैय – ये जानेमन जन्ती के भाई बीबी नसीबा के बेटे हैं, ग़ौसे आज़म रज़िअल्लाह अन्हू के सगे भान्जे हैं ।

मौलाना हिसामुद्दीन सलामती रहमतुल्लाह अलैय– इनकी मज़ार जौनपुर में है ।

शेख मोहम्मद लाहौरी रहमतुल्लाह अलैय– ये लाहौर के ख़लीफा हैं ।

और इसके अलावा मदारेपाक के ख़ुल्फ़ा की मुख़्तसर फ़ैहरिस्त ये हैं –

हज़रत सय्यद अबू मोहम्मद अरग़ून रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत सय्यद अबू तुराब फ़न्सूर रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत सय्यद अबुल्हसन तैफ़ूर रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत मौलाना हिसामुद्दीन सलामती रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत कुतुब गौरी रहमतुल्लाह अलैय, जिनका जनाज़ा बारह साल तक चलता रहा ।

हज़रत मौलाना फ़ख़्रूद्दीन जमशेद रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत सुल्तान अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैय ।

मौलाना रशीद अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैय ।

शाह जानुल्लाह रहमतुल्लाह अलैय ।

शाह करमुल्लाह रहमतुल्लाह अलैय ।

नूरूल्लाह बसरी रहमतुल्लाह अलैय ।

रहमतुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत क़ाज़ी मुतहर क़ल्लेशेर रहमतुल्लाह अलैय ।

शाह हुसैन बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैय ।

सय्यद पीर हनीफ रहमतुल्लाह अलैय, मथुरा बाज़ार, बलरामपुर।

हज़रत शाह दाना बुख़ारी बरेलवी रहमतुल्लाह अलैय ।

क़ाज़ी सय्यद महमूद क़िन्तूरी रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत मन्सूर बिल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैय ।

हज़रत शाह दयाल मलन्ग रहमतुल्लाह अलैय ।

शाह जमाल बिहारी रहमतुल्लाह अलैय ।

अहमद अली दुर्रानी रहमतुल्लाह अलैय ।

शाह कमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैय ।

मख़्दूम अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैय ।

शाह क़रार बस्वई ।

शाह सददन सरमस्त गुजराती ।

सय्यद यासीन रहमतुल्लाह अलैय, जिनके नाम से मकनपुर में यासीन नदी बह रही है, जो कसरते इस्तेमाल से ईरान कही जाने लगी है ।

इसके अलावा हज़ारों ख़लीफा सरकार मदारे पाक के हैं, जिनका ज़िक्र इस मुख़्तसर क़िताब में करना मुश्किल हैं ।

है हमारी ज़िन्दगी ज़िक्रे मदारूल आलमीं,
हम न छोड़ेंगे कभी ज़िक्रे मदारूल आलमीं ।
रोकना जो चाहते हैं वो मुख़ालिफ देख लें,
हो रहा है और भी ज़िक्रे मदारूल आलमीं ।
काश हो महज़र यही बस ज़िन्दगी का मश्गला,
ज़िक्रे हक़, ज़िक्रे नंबी, ज़िक्रे मदारूल आलमीं ।

शजर वक़ारी

शरजए आलिया तब्क़ातिया तैफ़ूरिया वक़ारिया मदारिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ।

रहम कर ऐ दस्तगीरे बेकसाँ,
बहरे सरदारे दो आलम नूरे जाँ,
सुन ले दिल की ऐ ख़ुदा बहरे अली,
मुझ पे कर राज़े तरीक़त मन्जली,
फख़्र की सब मन्ज़िलें हो जाएं तै,
वास्ता या रब हसन बसरी का है,
ऐ ख़ुदा बहरे हबीबे पाक दिल,
इश्क़ की हो आग दिल में मुश्तइल,
बहरे हज़रत बायज़ीदे पाक बाज़,
खोल दे उल्फ़त का अपने मुझ पे राज़,
बहरे हज़रत सय्यदे क़ुत्बुल्मदार,
दीनो दुनियां पर तुझी पर हो मदार,
बू मोहम्मद के लिये ऐ किबरिया,
कर दरे पाके मोहम्मद का गदा,

सदक़ा ख़्वाजा हज़रते महमूद का,
हम्द में अपने मुझे रख ऐ ख़ुदा,
या इलाही शाह प्यारे के लिये,
अपनी चाहत और अपना इश्क दे,
बहरे ख़्वाजा शाह शाहन रब्बना,
इन्तहाए फख्र कर मुझको अता,
शाह हम्मन के लिये ऐ जुल्करम,
दूर कर दिल के मेरे कुल हम्मो ग़म,
उस शहे महमूद सानी के तुफैल,
हो न या रब सूए दुनियाँ दिल को मैल,
सदक़े में हज़रत शहे मारूफ़ के,
कर मुनव्वर नूरे इरफाँ से मुझे,
बहरे शाहे मोल्वी अब्दुल जलील,
दे बुजुर्गी कर न आलम में ज़लील,
सदक़ा ख़्वाजा शाह फ़ज़्लुल्लाह का,
रास्ता बतला दे अपनी राह का,
सानी ख़्वाजा शाह प्यारे के लिये,

या ख़ुदा हुब्बे मोहम्मद मुझको दे,
बहरे सानी मोल्वी अब्दुल जलील,
तू ही हो हर हाल में मेरा कफ़ील,
बहरे ख़्वाजा मोल्वी ये नज़्में दी,
कर दे अपने मेहर से रोशन जबीं,
बहरे ज़ाते पाक शम्सुद्दीन हक़,
मुन्कशिफ हो मुझ पे हालाते तबक,
बहरे मुर्शिद सय्यदे कल्बे अली,
सामने तेरे हो या रब मुल्तजी,
हो करम मन्ज़र अली का किब्रिया,
निस्बते महेज़र अली का वास्ता,
दीनो दुनियॉ के बर आएं मेरे काम,
बे तरददुद जुमला या रब्बे अनाम ।

.....

फिक़्हे हनफ़ी की क़िताब "अलीफ़क़्हुल्मुइयेसर" (अरबी) का उर्दू तरजुमा (जिसने दीन के अहकाम का मुफ़स्सल ज़िक्र है) हक़ीर के इस तरजुमे का मनज़रे आम पर दुआओं के साथ आने का इन्तेज़ार करें ।

रूसियाहे दहर
शजर मदारी

शिज्र-ए-जद्दिया सय्यद महज़र अली

हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व.
हज़रत मौलाए कायनात अली करमल्लाहो वज्ह
हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रजि.
हज़रत सय्यद दुश्शोहदा इमाम हुसैन रजि.
हज़रत सय्यद इमाम जैनुल आबिदीन रजि.
हज़रत सय्यद इमाम मोहम्मद बाकर रजि.
हज़रत सय्यद इमाम जाफर सादिक रजि.
हज़रत सय्यद इमाम इस्माईल रजि.
हज़रत इमाम मोहम्मद रजि.
हज़रत सय्यद इस्माईल सानी रजि.
हज़रत सय्यद ज़हीरउद्दीन रजि.
हज़रत सय्यद बहाउद्दीन रजि.
हज़रत सय्यद क़ाजी किदवतुद्दीन अली हलबी रजि.
हज़रत सय्यद महमूदउद्दीन भ्रातः हज़रत सय्यद बदीउद्दीन अहमद
हज़रत सय्यद जाफर रजि.
हज़रत सय्यद अबू सईद रजि.
हज़रत सय्यद निज़ामुद्दीन रजि.
हज़रत सय्यद इस्हाक रजि.
हज़रत सय्यद इस्माईल रजि.
हज़रत सय्यद इब्राहीम रजि.
हज़रत सय्यद दाऊद रजि.
हज़रत सय्यद वजीहउद्दीन रजि.
हज़रत सय्यद कबीरउद्दीन रजि.
हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह रजि.

हज़रत ख्वाजा सय्यद अबू तुराब फन्सूर
हज़रत सय्यद दरिया सईद रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद रिज़कुल्लाहे रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह रजि.
हज़रत सय्यद सलमान रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अब्दुल हमीद रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अब्दुलस्सुब्हान रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद सिर्रुल कुद्दूस रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद रहमतुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अजमतुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद चाँद मदारी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अब्दुस्सुब्हान मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैह
मौलाई सय्यद खुश वक्त अली रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत कुत्बे आलम सै. कलबे अली
(ह.मौ. क़ारी अलहाज) सै. महज़र अली
मौलाई अबुल वक़ार सै.
कल्बे अली जाफ़री मदारी के 10 पुत्र और 3 पुत्रियाँ
मौलाना सय्यद जुल्फिक़ार अली, मोलवी स. मुख्तार अली
सय्यद आले अली, सय्यद कुद्दूस अली,
सय्यद सय्यद अली, सय्यद मुहर्रम अली,
हाजी सय्यद मन्ज़र अली, मौलाना सय्यद वक़ार अहमद
सय्यद तफ़ाख़ुर अली साहब ।
पुस्तक के लेखक (सय्यद महज़र अली साहब) के पुत्र एवं पुत्रियाँ
सय्यद शजर अली, सय्यद यासिर अली
सय्यद इन आमुर्रब-उर्फ सय्यद औसत अली
सय्यदा इकरा खातून एवं ताहा खातून

शिज्र-ए-मुर्शिदिया हज़रत सय्यद महज़र अली

हज़रत रसूल-ए-मुअज़्ज़म सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम
मौला अली रज़ियल्लाहो अन्हो
हज़रत हसन बस्री रजि.
हज़रत हबीब अज़मी रजि.
हज़रत बायज़ीद बुसतामी
हज़रत सय्यद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रजि.
हज़रत सय्यद अबू मुहम्मद अरगून रजि.
हज़रत सय्यद शाह महमूद रह.
हज़रत सय्यद ख्वाजा प्यारे रह.
हज़रत सय्यद शाह शाहन रह.
हज़रत सय्यद शाह हम्मन रह.
हज़रत सय्यद शाह महमूद सानी
हज़रत सय्यद मारूफ रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद शाह मोलवी अब्दुल जलील रह.
हज़रत सय्यद फजलुल्लाह
हज़रत सय्यद प्यारे
हज़रत सय्यद अब्दुल जलील सानी (द्वितीय)
हज़रत सय्यद ख्वाजा नजमुद्दीन
हज़रत शाह सय्यद शम्सुद्दीन
हज़रत मौलाना अबुल वक़ार सय्यद कल्बे अली
हज़रत सय्यद महज़र अली जाफरी

52–डाकू औलिया बन गये

हूजुर सरकार मदारे पाक रजि० जब मेवात के काले पहाड़ पर पधारे तो 52 डकैतों ने आपको लूटने की योजना बनाई वे समझते थे कि आप के पास अत्यधिक माल होगा तथा आप व्यापारी वर्ग से होंगे किन्तु उन्हें क्या मालूम कि सरकार के पास इश्के रसूल का खजाना है जिसको कोई बड़ी - 2 ताकतें भी नहीं लूट सकती है बहरहाल जब आपकी ओर ये डकैत चले तो आपने मुख से नकाब उठा दिया फिर क्या था सभी की आंखे जाती रहीं डकैतों का सरदार चिल्लाने लगा कि मुझे कुछ दिखायी नहीं देता है। उसके साथियों ने भी यही शिकायत की तब सभी को समझ में आ गया कि निश्चित ही यह कोई बड़े बुजुर्ग हैं जिनको हम लोग लूटने जा रहे हैं। इसी कारण हम सभी अंधे हो गये। अब सी को पश्चयाताप के अश्रु बहाने के सिवा कुछ समझ नहीं आ रहा था कि एक ने कहा कि हमको बुजुर्ग से माफी मांगनी चाहिए और सभी लोग आपकी सेवा में उपस्थित होकर अपने पापों की माफी मांगने लगे। सरकार मदार ने उनसे कहा कि तुम लोग अकारण ही बबर्रता पूर्वक लोगों पर अत्याचार करते हो। उनको लूट लेते हों और उनके साथ निर्दयीता का व्यवहार करते हों इस अत्याचार को जीवन भर के लिए त्यागने की प्रतिज्ञा करो तब मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा। इन लोगों ने आपकी बात मान ली। आपने फिर उन सभी की आंखों में अपनी लार लगा दी। फलत: सभी की नेत्र ज्योति आ गयी और संसार की जगमग को देखने में सक्षम हो गये।

विभिन्न शहरों में प्रस्थान

इसके बाद हुजूर जबलपुर होते हुए अजमेर शरीफ पहुंचे और राजस्थान आदि के क्षेत्रों में इसलाम की शिक्षा देते हुए मन्दसौर तशरीफ़ लाये। यहां आपके चरणों का स्पर्श पाकर धरती मानो स्वर्ण की हो गयी लोगों में हर्षोल्लास का वातावरण था एक दूसरे को बधाई देते कि हमारा मसीहा, हमारा दाता हमारे कष्टों एवं दु:खों को दूर करने आ गया आपने यहां भी में जनता में खूब इश्के रसूल की दौलत बांटी और खुद की कृपा एवं दया से लोगों की समस्यायें दूर कर दी। अब क्या था आपके नाम की चर्चा खूब होने लगी। मन्दसौर में आपके चिल्ले मौजूद है जहां से लोगों की मन्नतें एवं मुरादें पूरी होती है।

फिर आप महाराष्ट्र केरल आदि के अनेक शहरों में ठहरें ताकि लोगों में इस्लाम का प्रचार प्रसार हो जाये। यहां से आप पंजाब एवं सिंध प्रदेशों में इस्लाम का प्रचार करते हुए लाहौर में ठहर गये और अपने उसूल के अनुसार दीन की खिदमत में वक्त गुजारने लगे। लाहौर से 'शरफ नगर' में आप थोड़े समय के लिए ठहर गये।

किताब मिलने का पता

शाह जमाअत कार्यालय
लेबर कॉलोनी, नई आबादी, रोड़ नं. 3,
मन्दसौर (म.प्र.) 458001

✪✪✪

(संचालक)
ख्वादीम साबीर अली शाह मदारी
दरगाह मदार चिल्ला शरीफ,
गोंदी चौक, मन्दसौर (म.प्र.)

✪✪✪

(संचालक)
ख्वादीम आशक अलीशाह मदारी
दरगाह मदार चिल्ला शरीफ,
मदारपुरा, मन्दसौर (म.प्र.)

✪✪✪

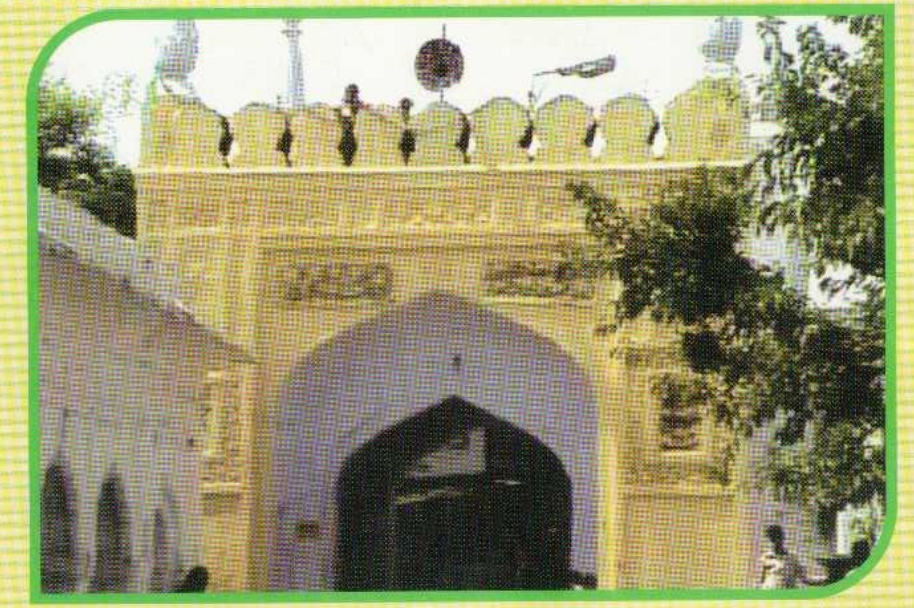

~~ किताब मिलने का पता ~~

खादीम साबीर अलीशाह मदारी

दरगाह मदार चिल्ला शरीफ, गोंदी चौक, मन्दसौर (म.प्र.)

खादीम आशक अलीशाह मदारी

दरगाह मदार चिल्ला शरीफ, मदारपुरा, मन्दसौर (म.प्र.)